हरि किरतन उपदेस राम धुन गाजो रे

ग्यानी जन के ग्यान ध्यान समजाजो रे... सांची तो...।।

(10×3=30)

2. लोकनाट्य परंपरा पर विचार करते हुए 'रामलीला'की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'ख्याल' का स्वरूप स्पष्ट करते हुए इनकी परंपरा पर प्रकाश डालिए। (15)

3. 'सुल्ताना डाकू' की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

अथवा

'सुल्ताना डाकू' नौटंकी के कथानक की समीक्षा कीजिए। (10)

4. 'भिखारी ठाकुर का मन संयोग शृंगार की अपेक्षा वियोग शृंगार में अधिक रमा है' - 'बिदेसिया' के आधार पर सिद्ध कीजिए।

अथवा

बिदेसिया के नाट्य शिल्प की समीक्षा कीजिए। (10)

5. 'सत्यवान-सावित्री' सांग में सावित्री और यमराज के मध्य हुए वार्तालाप का वर्णन कीजिए।

अथवा

'राजयोगी भरथरी' माच की मूल संवेदना लिखिए। (10)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 8783 **IC**

Unique Paper Code : 12057607

Name of the Paper : Lok Natya लोकनाट्य (HDSE-A)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS – DSE**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) अँगना आनंद लागत, दुअरा बधाव बाजत,

जाये के बिदेस रउआ कबहूँ मत भाखिये।

धोती आ कमीज, टोपी आसकीटसिलाइ देहब,

इतर के बास तेल भूतनाथ माखिये।

बिबिध मिठाई, पकवान, तरकारी, दधी, निमिकी,

मोराबा, पापड़, घरहीं सब चाखिये।

कहत 'भिखारी' पिया हिया में छमा करिके

हम से गरीबनी पर दया नित राखिये।

अथवा

पिया मोर, मति जाहो पुरुबवा।

पुरुब देस में टोना बेसी बा, पानी बहुत कमजोर। पिया मोर...

सुनत बानी आँख पानी देतबा, सारी भइल सर बोर। पिया मोर...

एक नाथ बिनु मन अनाथ रही, घुसी महल में चोर। पिया मोर...

कहतश भिखारीश हमारी ओर देख, कतिना करहीं निहोर ? पिया मोर...

(ख) वेद रीति और हवन कुण्ड एक श्रेष्ठ सा घर चाहिए सै।

इंद्रजीत पराक्रमी पति मेरे को वर चाहिए सै।। टेक।।

माता पिता की सेवा करके चरणा मैं सिर धरता हो।

समदम उपरम सात धाम कुछ संयम यज्ञ भी करता हो।

अग्नि होत्र पंच महायज्ञ ओ३म का नाम सूमरता हो।

तीन काल संध्या तर्पण मैं मन इधर-उधर ना फिरता हो।

ण्ष्ण जैसा योगी हो, ना तै अर्जुन सा वर चाहिए।।

अथवा

सत्पुरुषों का विश्वास चित्त अंदर धर्या करै।

सबसे प्रीत रखते हुए सब पर दया कर्या करै।

मनोरथ पूरा हो जाने पर संग से ना टर्या करै।

आत्मा अपणी पै छिड़वा ज्ञान की लगाओ चास।

प्रीत से विश्वास होता धर्म से निभाओ खास।

कहै लखमीचंद कदे सुणी ना जिसी आज तनै बात बताई।।

(ग) सांचो सत जंगल का जीव में, देख्यो हे म्हने देख्यो हे।।

सत को सांचो पड़छो देख्यो, यो मन म्हारो बेक्यो हे

जेसे पाप की पड़ती छत में, सत को थांबो टेंक्यो हे।

सत को सांच देखी ने भरम मन, को हेड़ीने फेंक्यो हे

सत की संगत से मन जाग्यो, मोह को बंदन छेक्यो हे।

गिद्ध पे सत्ती हुइ हे गीरदणी, आग में तन सब सेंक्यो हे।

अथवा

सांची तो संगत सादु की सुण जाजो रे

तम टेड़ी-मेड़ी दुनिया की चाल में मत आजो रे।।

धर जोगी को बेस फिरो तो गम खाजो रे

तम छोटी बात पे क्रोध कदी भी मत लाजो रे... सांची तो...।।

सादु संगत बेठ पारस बण जाजो रे

हे अलख नाम सुखधाम मुद्री पाजो रे... सांची तो...।।